27

खेल केन्द्रः उद्देश्य

पिछले अध्याय में हमने प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चे की विशेषताओं तथा आवश्यकताओं से अवगत होने का प्रयास किया है। हमने देखा कि किस प्रकार आयु में परिवर्तन के साथ–साथ इन विशेषताओं में भी परिवर्तन होता है तथा शारीरिक रूप से विकसित होने पर बच्चे हर दष्टि से अपने आप को कैसे अधिक परिपक्व महसूस करते हैं। अब वे आसानी से इधर–उधर जा सकते हैं व उनकी मां के लिए आसानी हो जाती है। वे उत्सुक भी होते हैं और इसलिए वे नई बातों को जानना चाहते हैं और अनेक प्रश्न पूछते हैं। वह अन्य बच्चों में रुचि लेना आरंभ कर देता/देती है और उनके साथ रहना चाहता/चाहती है। क्या मां अपने बढ़ते हुए बच्चे की देखरेख के लिए पूरी तरह से तैयार है? क्या बच्चे की मदद की जा सकती है? इस स्तर पर बच्चे के लिए किस प्रकार के स्कूल का चयन किया जाना चाहिए? आदि ऐसे कुछ प्रश्न हैं जिनके उत्तर हम इस पाठ से प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात, आपके लिए सम्भव होगाः

- प्ले सैंटर को परिभाषित करना;
- एक प्ले सेंटर की आवश्यकता का वर्णन करना;
- एक प्ले सेंटर के उद्देश्यों का उल्लेख करना;
- प्ले सेंटर में बच्चे की देखरेख को समझना;
- बच्चों की व्यवहारात्मक समस्याओं से निपटना।

27.1 प्ले सेंटर का अर्थ

प्ले सेंटर एक ऐसा स्थान है जहां बच्चों को विभिन्न सुविधाएं जैसे खिलौने, खेल का स्थान आदि उपलब्ध होती हैं। जहां उन्हे वातावरण को समझने व अनुभव करने का अवसर प्राप्त होता है; जहां अनेक बच्चों को आपस में मिलने का अवसर मिलता है तथा इस प्रकार बच्चे का समग्र विकास होता है। यहां औपचारिक शिक्षण पर बल नहीं दिया जाता है बल्कि खेल के माध्यम से सीखने पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। यहां पर्यावरण मैत्रीपूर्ण तथा प्रेरणादायक होता है। प्ले सेंटर में 2-5 वर्ष की आयु के बच्चों को प्रतिदिन 2-3 घण्टों तक रखा जाता है।

इस प्रकार आप कह सकते हैं किः

खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर):

(क) बच्चों के लिए निर्मित इकाइयां है जो बच्चों को उनकी अपनी गति से विकसित होने में सहायता उपलब्ध कराते हैं।

(ख) बच्चे के साकल्यवादी विकास पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

(ग) खेल, खोज तथा अन्वेषण के माध्यम से स्वतंत्र व सामूहिक शिक्षण को आमंत्रित किया जाता है। इसलिए सीखना अति आनन्दमयी अनुभव हो जाता है।

(घ) स्कूल तथा स्कूल व्यवस्था के प्रति प्रोत्साहन को बनाए रखने में सहायक होता है।

खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) क्या नहीं हैः

(क) एक लघु प्राथमिक विद्यालय

(ख) एक स्थान जहां अध्यापक केन्द्रित शिक्षण को प्रोत्साहित किया जाता है।

(ग) एक स्थान जहां निष्क्रिय शिक्षण तथा कठोर आज्ञापालक की आवश्यकता होती है।

क्रिया

आपके समीप स्थित एक प्ले सेंटर को देखें तथा उनकी क्रियाओं का वर्णन कीजिए।

27.2 खेल-केन्द्र (प्ले सेंटर) आवश्यकता तथा आधार

अतः क्या अब आप बता सकते हैं कि बच्चों को खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) में जाने की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

2-5 वर्ष की आयु के बच्चों की सीखने की प्रक्रिया की कुछ विशिष्ट आवश्यकताएं होती हैं जो खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) की मांग को उत्पन्न करती हैं इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

(क) बच्चे प्राकतिक रूप से खेल के माध्यम से सीखते हैं।

(ख) बच्चे स्वयं करके ही सबसे अच्छे ढंग से सीखते हैं।

(ग) बच्चों की एकाग्रता की अवधि अधिक नहीं होती (7-15 मिनट)

(घ) 3 वर्ष के बच्चे का मस्तिष्क व्यस्क मस्तिष्क का 80 प्रतिशत होता है जो सर्वाधिक शिक्षण को सुलभ बनाता है, इसलिए उन्हें इस स्तर पर प्रेरणादायक वातावरण की आवश्यकता होती है।

(ङ) बच्चे एक दूसरे से, अन्य बच्चों से, वयस्कों से तथा वास्तविक वातावरण से आसानी से सीखते हैं।

पाठगत प्रश्न 27.1

बताएं सही या गलतः

1. प्ले सेंटर एक स्पोर्ट्स क्लब है। सही/गलत
2. प्ले सेंटर का कठोर ढांचा व कड़ा अनुशासन होता है। सही/गलत
3. बच्चे तभी सीखते हैं जब बड़े उन्हें सिखाते हैं। सही/गलत
4. प्ले सेंटर बच्चा केन्द्रित है, अध्यापक केन्द्रित नहीं। सही/गलत
5. प्ले सेंटर में बच्चों को अपनी स्वयं की गति से सीखने का अवसर मिलता है। सही/गलत

27.3 खेल-केन्द्र (प्ले सेंटर) के उद्देश्य

अब तक आप समझ गए होंगे कि खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) के उद्देश्य तथा आवश्यकताएं क्या हैं तथा वह कैसे कार्य करता है। एक कागज तथा पैन लीजिए और इस संबंध में जितना ज्यादा आप लिख सकते हैं लिखिए। अब अपनी इस सूची को हमारी निम्नलिखित सूची से तुलना कीजिए।

खेल–केन्द्र (प्ले सेंटर) के उद्देश्य निम्नलिखित हैंः

1. बच्चे को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, वस्तुओं तथा स्थानों का अन्वेषण, प्रयोग तथा अनुभव उपलब्ध करना।
2. समायु समूह तथा वयस्कों के साथ समद्ध तथा सकारात्मक अंतक्रिया के लिए अवसर उपलब्ध कराता है।

टिप्पणी

3. बच्चे के साकल्यवादी विकास के लिए एक सुरक्षित एवं सहायक शिक्षण को प्रोत्साहित करना
4. बच्चों में निष्क्रिय की अपेक्षा सक्रिय सीखने को प्रोत्साहित करना।
5. बच्चे के विकासात्मक स्तर के अनुसार अनुभवों के सजन को सम्भव बनाना।
6. शिक्षण को अधिक तनावपूर्ण बनाए बिना बच्चे को अपनी स्वयं की गति से सीखने व विकसित होने का अवसर देना एवं उसमें रुचि एवं प्रेरणा को बनाए रखने के अवसर प्रदान करना।
7. बच्चे में स्वःनियंत्रण व अनुशासन को प्रोत्साहित करना
8. घर से औपचारिक शिक्षा का मार्ग तय करने में सहयोग करना।

आप ''नई शिक्षा नीति'' दस्तावेज से भी अवगत होंगे। इस दस्तावेज में उल्लेखित प्रारंभिक बाल्यावस्था तथा शिक्षण के उद्देश्य निम्नानुसार हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा देखिए कि दो सूचियों में क्या समानताएं व अन्तर हैं।

27.4 खेल-केन्द्र (प्ले सेंटर) में बच्चों की देख रेख

हमारी उपर्युक्त चर्चा के अनुसार प्ले सेंटर के उद्देश्यों में से एक है बच्चों को पर्यावरण को समझने की स्वतंत्रता प्राप्त कराना। आप कह सकते हैं कि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बच्चों को स्वछंद रूप से आस पास विचरण की अनुमति दी जाए। यदि प्ले सेंटर में आपके पास 20 बच्चे हैं तथा सभी को स्वेच्छा से कुछ भी करने के लिए मुक्त कर दिया जाए, तो क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि वहां क्या होगा?

किसी परिवेश में सुरक्षित अनुभव करने के लिए बच्चों में किसी प्रकार के अनुशासन की आवश्यकता होती है। अतः बच्चे को स्वीकार्य तथा अस्वीकार्य व्यवहार की सीमाओं से अवगत कराया जाना चाहिए। देख रेखकर्ता को बच्चे पर निरन्तर निगरानी रखने की आवश्यकता होती है तथा उसके द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए बच्चा व्यवहार के दौरान स्वयं को या उसके आस पास किसी अन्य को चोट न पहुंचाए।

अनुशासन के मूलत् तीन प्रकार हैं जिन्हें बच्चों पर लागू किया जा सकता है। ये प्रकार निम्नानुसार हैः

अधिकारवादी, अनुज्ञात्मक तथा लोकतांत्रिक।

अब हम इनके संबंध में अधिक जानेंगेः

अधिकारवादी अनुशासनः जब इस प्रकार का अनुशासन लागू किया जाता है तो बच्चे को निर्देश दिया जाता है कि उसे क्या करना है तथा क्या नहीं करना और इस संबंध में कोई

टिप्पणी

स्पष्टिकरण नहीं दिया जाता है। इसके अतिरिक्त बच्चे को पूर्ण कर्मनिष्ठा दर्शानी होती है। क्या आपने घर में इस प्रकार का अनुशासन देखा है? इसे कौन लागू करता है? क्या आप समझते हैं कि प्ले सेंटर में देखरेखकर्ता इस प्रकार के अनुशासन को लागू कर सकता है? हां वह कर सकता/ती है। अधिकारवादी अनुशासन में बच्चे को वही कार्य करना होता है जो देखरेखकर्ता द्वारा कहा जाता है तथा जैसे हम पहले कह चुके हैं कि इसमें सम्पूर्ण कर्मनिष्ठा होती है तथा इसमें कोई अपेक्षा या प्रश्न नहीं होते हैं।

बच्चे इस प्रकार के वातावरण में खुश नहीं रहते हैं। क्या आप बता सकते हैं कि ऐसा क्यों? जी हां, आप सही हैं। उनके पास अपनी इच्छा से कुछ भी करने की स्वतंत्रता नहीं है। यदि बच्चों पर अत्यधिक निगरानी रखी जाएगी तो वे अपना काम चुपचाप तथा देखरेखकर्ता के पीछे करेंगे। वे झूठ बोलना भी सीखेंगे। यदि बच्चों को हर समय बताया जाएगा कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं तो वे दूसरों पर आश्रित होने लगेंगे। वे हमेशा दूसरों के निर्देशों का इंतजार करेंगे तथा कभी भी स्वालंबी नहीं हो पाएंगे।

अनुज्ञात्मक अनुशासनः इस प्रकार का अनुशासन अधिकारवादी अनुशासन के पूर्णतः विपरीत है। बच्चे को जो करना व जब करना अच्छा लगता है, उसे करने की अनुमति दे दी जाती है। यहां कोई नियम तथा कोई दिशानिर्देश नहीं है तथा बच्चे को स्पष्टिकरण भी दिया जाता है। क्या आप प्ले सेंटर में इस प्रकार के अनुशासन के परिणामों को बता सकते हैं? हां, बच्चों को किसी की बात न सुनने, किसी आदेशों को न सुनने की आदत पड़ जाएगी तथा वे वहां करेंगे जो उन्हें अच्छा लगता है, इस प्रकार का व्यवहार उन्हें स्वःकेन्द्रित तथा मतलबी बना देगा। इसके अतिरिक्त देखरेखकर्ता से काई दिशानिर्देश प्राप्त न होने के कारण बच्चे पथभ्रष्ट हो जाएंगे तथा उन्हें बुरी आदतें भी पड़ सकती हैं।

लोकतांत्रिक अनुशासनः इस प्रकार का अनुशासन उपर्युक्त वर्णित दो प्रकार के अनुशासनों के मध्य की स्थिति को दर्शाता है। क्या आप लोकतांत्रिक अनुशासन की कुछ विशेषताओं के संबंध में विचार कर सकते हैं? निम्नलिखित पर विचार कीजिएः

- नियमों को लागू करने से पूर्व उनका वर्णन किया जाता है।
- बच्चे नियमों पर प्रश्न उठा सकते हैं तथा संयुक्त सहमति से उनमें परिवर्तन किए जा सकते हैं।
- बच्चों की अपनी इच्छा से स्वयं करने दिया जाता है किन्तु उन्हें यह सुनिश्चित करना होता है कि वे स्वयं को या किसी अन्य को चोट न पहुंचाएं।

आपको क्या लगता है कि इस प्रकार के अनुशासन के क्या लाभ हो सकते हैं? जी हां, आप सही हैं, बच्चे बड़ों की बात मानेंगे तथा नियमों का आदर करना सीख जाएंगे, स्वयं में आत्मविश्वास विकसित करेंगे, किसी भी कार्य में पहल करना सीखेंगे तथा स्वतंत्र रूप से कार्य करेंगे। बच्चे अपनी बारी लेना, सहयोग करना तथा धैर्य रखना भी सीख जाएंगे।

आपको इस प्रकार का अनुशासन परिवार के अन्दर मिल जाएगा। ऐसे ही किसी परिवार का अवलोकन करें तथा देखें कि बच्चे किस प्रकार से अनुशासित हैं।

क्रिया

अपने किसी समीपवर्ती प्री–सकूल/ प्ले सेंटर का दौरा करें तथा अध्यापक से उनके उद्देश्यों का पता लगाएं। तत्पश्चात उन्हें इस पाठ में दिए गए उद्देश्यों के आधार पर मूल्यांकन करें।

पाठगत प्रश्न 27.2

1. बताएं सही या गलतः

   (i) एक प्ले सेंटर को कुशलतापूर्वक चलाने के लिए उद्देश्य पूर्वापेक्षाएं हैं। सही/गलत

   (ii) प्ले सेंटर में सभी बच्चों के केवल सामूहिक खेल ही खेलने होते हैं। सही/गलत

   (iii) सुरक्षित तथा सहायक वातावरण उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी क्रियात्मक कौशल विकसित करने के लिए सुविधाएं। सही/गलत

   (iv) प्ले सेंटर में बच्चों को पढ़ना, लिखना तथा अंकगणित सिखाया जाता है। सही/गलत

   (v) एक प्ले सेंटर में बच्चे के समग्र विकास पर ध्यान दिया जाता है। सही/गलत

2. सही उत्तर का चयन करें:

   (i) अधिकारवादी अनुशासनः

   (क) पूर्ण आज्ञापालन की मांग

   (ख) पूर्ण स्वतंत्रता की अनुमति

   (ग) कम आज्ञापालन की मांग तथा अधिक स्वतंत्रता देना

   (घ) अधिक आज्ञापालन की मांग तथा कम स्वतंत्रता देना

   (ii) अनुज्ञात्मक अनुशासनः

   (क) पूर्ण आज्ञापालन की मांग

   (ख) पूर्ण स्वतंत्रता की अनुमति

   (ग) कम आज्ञापालन की मांग तथा अधिक स्वतंत्रता देना

   (घ) अधिक आज्ञापालन की मांग तथा कम स्वतंत्रता देना

   (iii) लोकतांत्रिक अनुशासनः

   (क) पूर्ण आज्ञापालन की मांग

टिप्पणी

(ख) पूर्ण स्वतंत्रता की अनुमति

(ग) कम आज्ञापालन तथा अधिक स्वतंत्रता देना

(घ) अधिक आज्ञापालन तथा कम स्वतंत्रता देना

(iv) अच्छे प्ले सेंटर को ऐसे अनुशासन का अनुसरण करना चाहिए जो होः

(क) अधिकारवादी

(ख) अनुज्ञात्मक

(ग) लोकतांत्रिक

(घ) सभी प्रकारों का मिश्रण

(v) बच्चें की झूठ बोलने की आदत पड़ जाएगी यदि अनुशासन होः

(क) अधिकारवादी

(ख) अनुज्ञात्मक

(ग) लोकतांत्रिक

(घ) इनमें से काई नहीं

(vi) बच्चे 'पहल' करना सीखेंगे यदि अनुशासन का अनुसरण किया जाए

(क) अधिकारवादी

(ख) अनुज्ञात्मक

(ग) लोकतांत्रिक

(घ) इनमें से काई नहीं

(vii) बच्चे स्वयं में आत्मविश्वास विकसित करते हैं यदि उनका लालन पालन ..... अनुशासन में किया जाए।

(क) अधिकारवादी

(ख) अनुज्ञात्मक

(ग) लोकतांत्रिक

(घ) इनमें से काई नहीं

27.5 प्ले सेंटर में बच्चों में व्यवहारात्मक समस्याएं

प्रायः छोटे बच्चे अनुचित व्यवहारों को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए बच्चा सभी को मारने की आदत विकसित कर ले, वस्तुओं को तोड़ने, गलत भाषा के प्रयोग, झूठ बोलने आदि

टिप्पणी

की आदत बना लेते हैं। इस प्रकार के व्यवहार बच्चों के लिए न केवल शारीरिक रूप से हानिकारक होते हैं बल्कि ये बच्चों को अन्य बच्चों में अप्रिय भी बना देते हैं।

कारणः बच्चे द्वारा इस प्रकार के व्यवहार को विकसित करने के कई कारण हो सकते हैं। इनमें से कुछ निम्नानुसार हैंः

- जब बच्चे ऐसे परिवेश में रहते हैं जहां उन्हें स्वःअभिव्यक्ति से वंचित रखा जाता है तो वे ऐसे व्यवहार करने लगते हैं जो स्वीकार्य नहीं होते।
- जब मातापिता व अध्यापक बच्चों से अत्यधिक उम्मीदें लगा लेते हैं तथा बच्चे उन्हें पूरा नहीं कर पाते हैं तो वे अस्वीकार्य व्यवहार करने लगते हैं।
- प्रायः बच्चे यह सीख जाते हैं कि अपनी बात को मनवाने के लिऐ अस्वीकार्य व्यवहार औजार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए बच्चा समझ जाता है कि जब वह अपने छोटे भाई या बहन को मारेगा तो उसके माता पिता उस पर ध्यान देंगे या जब वह रोएगा या फर्श पर लोटेगा तभी उसे खिलौने मिलेंगे।
- जब परिवार का वातावरण अशांत हो, उदाहरण के लिए जब माता पिता आपस में लड़ते हों, वे एक दूसरे को मारते हों या जब उनकी मां उनकी दादी के साथ नहीं रहती हो, तब बच्चे अस्वीकार्य व्यवहार को ग्रहण करने लगते हैं।
- जब बच्चे के जीवन में कोई संकट उत्पन्न हो जाए। उदाहरण के लिए बच्चा अपने छोटे भाई या बहन के जन्म पर अथवा परिवार के किसी प्रिय सदस्य की मत्यु पर असामान्य व्यवहार करने लगता है।
- बच्चे उस समय भी अस्वीकार्य व्यवहार करने लगते हैं जब से शारीरिक कारणों से परिस्थितियों से निपट नहीं पाते हैं। ऐसा तब होता है जब उन्हें कोई लम्बी बीमारी हो या वे बारम्बार बीमार पढ़ते हों।

प्ले सेंटर पर देखरेखकर्ता को सतर्क तथा व्यवहारकुशल होना चाहिए। जब कभी कोई बच्चा अस्वीकार्य व्यवहार करता है तो देखरेखकर्ता को तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। चूंकि अधिकतर व्यवहारात्मक समस्या घर से उत्पन्न होती है। इसलिए उन्हें बच्चों के माता पिता से सहयोग लेना चाहिए, समस्या को समझना चाहिए तथा ऐसी नीति विकसित करनी चाहिए जो उक्त समस्या के समाधान में सहायक हो सके। सजा देने तथा डांटने या भला–बुरा कहने से कोई मदद नहीं मिलेगी। कुछ सामान्य व्यवहारात्मक समस्याओं का उल्लेख तालिका २७.१ में किया गया है तथा इस तालिका में इस बात का भी उल्लेख है कि सामान्यतः वयस्कों को क्या करना चाहिए तथा क्या नहीं।

टिप्पणी

तालिका 27.1: *छोटे बच्चों में पाई गई कुछ सामान्य व्यवहारात्मक समस्याएं*

व्यवहार	अर्थ	नहीं करना चाहिए	करना चाहिए
(क) **अन्य बच्चों को चोट पहुंचाना**	– क्रोध की भावना	– दण्ड देना या चोट पहुंचाना – उसे अहसास कराना	– उसका ध्यान विकेन्द्रित करें – अन्य बच्चों से अलग करें – भावनाओं के अन्य माध्यमों की सहायता से बच्चे को प्यार का अहसास दिलाना
(ख) **वस्तुओं को तोड़ना**	–असहायता की भावना – जलन – बोर होना – ध्यान आकष्ट करना	– डांटना, चिल्लाना, दण्ड देना, थप्पड़ मारना या चोट पहुंचाना	– बहुमूल्य वस्तुओं को बच्चों की पहुंच से दूर रखें – खेलने के लिए स्थान उपलब्ध कराएं – निम्न लागत के विकल्प उपलब्ध कराएं – बच्चे को अन्य गतिविधियों में विकेन्द्रित करें
(ग) **अंगूठा चूसना**	– चूसने की आदत, आराम तथा आश्वासन – थकावट – भूख – असंतोष – ऊबना	– उंगलियों को बांधना या उन पर कड़ी दवा लगाना	– चूसने का संतोष उपलब्ध कराएं – प्यार व स्नेह दें – आनन्दमयी गतिविधियेां में लगायें – बच्चे की आवश्यकता की वस्तुएं उपलब्ध कराएं
(घ) **बिस्तर गीला करना**	– बच्चा प्रशिक्षण के लिए तैयार नहीं है – भय – असुरक्षा की भावना	– डांटना या दण्ड देना – उसे पहले बताने को कहना – यह कहना कि आप बच्चे को प्यार नहीं करते	– बच्चा जैसा है उसे वैसे ही स्वीकार करना – अचानक बिस्तर गीला करने की प्रवति को स्वीकार करना – बच्चे में आत्मविश्वास को विकसित करने में सहायता देना व प्रोत्साहित करना
(ङ) **झूठ बोलना**	– दण्ड का भय – अतिरंजना – कल्पना – ध्यान आकर्षित करना	– उपदेश देना या दण्डित करना या धुतकारना – माफी मांगने को कहना – नाराज हो जाना	– कारणों को समझें – अपेक्षित ध्यान दें – कल्पनाओं को समद्ध बनाने का अवसर प्रदान करें।
(च) **भोजन करने से इंकार करना**	– भूख नहीं है – ठीक महसूस न करना – भोजन विशेष अच्छा न लगना	– जबरदस्ती करना, दण्ड देना – बात को बढ़ाना – इनाम, धमकी देना – कहना मानने के लिए जबरदस्ती करना	– शांत बने रहें – बच्चे की मनपसंद भोजन सहित नए प्रकार के व्यंजन बनाएं
(छ) **भय**	– दर्द भरे अनुभवों को याद करना – माता पिता का ध्यान आकर्षित करने के लिए – दोषी या अप्रिय अनुभव करना	– भय के कारण का पता लगाने के लिए जोर देना, शर्मिंदा करना या धमकाना	– उसे पुनः आश्वस्त करें व आरामदाय स्थिति में रखें – परिवेश को खुशनुमा बनाए – प्रयासों की सराहना करें – भयपूर्ण अनुभवों से बचें तथा स्वयं की मदद करने में उसकी सहायता लें
(ज) **चोरी**	– सम्पति अधिकारों से अनजान होना – असंतुष्ट आवश्यकताएं – चिड़चिड़ाहट – विरोधी भावना	– डांटना, बुरा महसूस कराना, दण्ड देना या निंदित करना – प्यार में कमी करना – दूसरों के सामने बेइज्जत करना	– बच्चे को वस्तुएं दे दीजिए तथा उनके स्वामित्व की भावना डालें। – दयालु बनें, बच्चे को समझें तथा अत्यधिक कठोर न बनें – सजनात्मक स्रोत उपलब्ध कराएं – अच्छे दोस्त बनाने में सहयोग करें

गतिविधि

अपने पड़ोस के दो बच्चों का अवलोकन करें तथा उनमें किसी प्रकार की व्यवहारात्मक समस्या का पता लगाएं। मूल्यांकन करें कि उनके व्यवहार ऊपर दर्शाए विवरणों के कितने समीप हैं। यह भी पता लगाएं कि बच्चों के मातापिता उनके व्यवहारों से कैसे निपटते हैं।

पाठगत प्रश्न २७.३

1. रिक्त स्थान भरें:

   (i) ..... अनुशासन में बच्चे को किसी प्रकार का मार्गदर्शन नहीं।

   (ii) ..... अनुशासन बच्चे के लिए सर्वाधिक लाभकारी है क्योंकि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता उपलब्ध कराता है।

   (iii) ..... अनुशासन में माता पिता कारण के स्थान पर प्राधिकार के नियम चलाते हैं।

   (iv) जिन बच्चों में चोरी करने की आदत हो उन्हें ..... या ..... नहीं किया जाना चाहिए।

   (v) अशांत पारिवारिक वातावरण के कारण ..... उत्पन्न हो सकती हैं।

2. सही विकल्प का चयन करें:

   (i) बच्चे अस्वीकार्य व्यवहार विकसित कर लेते हैं यदि वातावरण:

   (क) घणित

   (ख) मुक्त

   (ग) घणित व मुक्त हो

   (घ) इनमें से कोई नहीं

   (ii) बच्चे को किस प्रकार के अनुशासन में दण्डित या मजाक उड़ाया जाता है:

   (क) अधिकारवादी अनुशासन

   (ख) लोकतांत्रिक अनुशासन

   (ग) अनुज्ञात्मक अनुशासन

   (घ) उपर्युक्त सभी अनुशासनों में

   (iii) एक बच्चा अपना अंगूठा चूसता है क्योंकि वह

   (क) ऊबता है

टिप्पणी

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) ध्यान केन्द्रित करना चाहता है

(iv) बच्चा बिस्तर गीला करता है क्योंकि वहः

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) ध्यान केन्द्रित करना चाहता है

(v) बच्चा झूठ बोलता है क्योंकि वहः

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) ध्यान केन्द्रित करना चाहता है

(vi) बच्चा वस्तुओं को तोड़ता है क्योंकि वहः

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) ध्यान केन्द्रित करना चाहता है

(vii) बच्चा चोरी करता है जब वह

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित महसूस करता है

(ग) भयभीत होता है

(घ) विरोधी प्रवति का होता है

(vii) बच्चा बार–बार खाना खाने से इनकार करता है क्योंकि वह

(क) ऊबता है

(ख) असुरक्षित होता है

(ग) विरोधी होता है

(घ) अस्वस्थ होता है

आपने क्या सीखा

प्ले सेंटर क्या है (अर्थ तथा विशेषताएं)

आवश्यकता व आधार	उद्देश्य	बच्चे की देखरेख	बच्चे में व्यवहारात्मक समस्याएं
– बच्चा खेल के माध्यम से सीखते है। – ध्यान केन्द्रित करने की अल्प अवधि – मस्तिष्क का विकास – एक दूसरे से सीखना – प्रोत्साहन बनाए रखना – निरन्तर मूल्यांकन	– सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करना – सीखने के लिए अवसर – अच्छी आदतें सीखना – सौन्दर्यविषयक विकास – सामाजिक– भावात्मक परिपक्वता – बौद्धिक उद्दीपन – सुरक्षित वातावरण – अभिव्यक्ति में सुधार – स्वतंत्रता को प्रोत्साहन	– अधिकारवादी – अनुज्ञात्मक – लोकतांत्रिक	– कारण – प्रकार – देखरेख के तरीके

पाठान्त प्रश्न

1. एक प्ले सेंटर के उद्देश्य उसकी विशेषताओं तथा कार्यक्रम को कैसे परिभाषित करते हैं।
2. एक पैराग्राफ लिखिए कि आप एक प्ले सेंटर में लोकतांत्रिक अनुशासन तकनीक का प्रयोग कैसे करेंगे?
3. बच्चों में व्यवहारात्मक समस्याओं के क्या कारण हैं?
4. आपके अनुसार माता पिता के समक्ष सर्वाधिक जटिल व्यवहारात्मक समस्या कौन सी है? कारण बताइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1 (1) गलत (2) गलत (3) गलत (4) सही (5) सही

27.2 1.(i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) गलत (v) सही

टिप्पणी

2. (i) क (ii) ख (iii) ग (iv) ग (v) क
(vi) ग (vii) ख

27.3 1. (i) अनुज्ञात्मक (ii) लोकतांत्रिक (iii) अधिकारवादी
(iv) दण्ड देना, निन्दित करना (v) व्यवहारात्मक समस्याएं

2. (i) क (ii) क (iii) क (iv) ख (v) घ
(vi) ग (vii) घ (viii) घ